International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 10, October 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गाँधीवादी ग्राम स्वराज एवं नरवागरवाघुरवाबाड़ी

डॉ. आई. पी. दिनकर
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र), पं. देवी प्रसाद चौबे शास, महाविद्यालय साजा जिला-बेमेतरा

बापू का देश अहिंसाव स्वावलंबन का देश है। वह विचारों से आधुनिक मगर देशज संस्कृति का वाहक है। सिद्धांत से अधिक व्यवहार में जीता है। बापू के यहां आचरण की पद्धति मनुष्य को कर्तव्य मार्ग की ओर ले जाती है। बापू ने अपना संपूर्ण जीवन इसी कर्तव्य मार्ग को समर्पित किया और जन-जन में आचरण की शुद्धता का सिद्धांत दिया। बापू के यहां आचरण की शुद्धता सत्यता, सादगी, स्वावलंबन और नैतिकता है। यह मूल मंत्र आजीवन बापू के साथ रहा और इसी मंत्र को उन्होंने जीवन और राष्ट्र का मंत्र बनाया।

बापू कहते हैं कि "हमारी सभ्यता का सार तत्व यही है कि हम अपने सार्वजनिक या निजी, सभी कामों में नैतिकता को सर्वोपरि स्थान दें"। वहीं आज हम इसका अभाव पाते हैं क्योंकि आज लोभ, लाभ और भौतिक सुख ही व्यक्ति के लिए सर्वोच्च है।प्रकृति पर स्वामितत्व व अधिकार की लालसा का परिणाम गांधी जानते थे इसी कारण उन्होंने आधुनिक भौतिक सुखवाद की नीतियों का विरोध किया है।

इसी प्रकार गाँव के लिए महत्त्व को देखते हुए आज छत्तीसगढ़ सरकार ने भी नरवागरवाघुरवाबाड़ीऊपर विशेष प्रकाश डाला है और छत्तीसगढ़ को इनके लाभ से परिचित कराया

हाल ही में नीति आयोग की बैठक में छत्तीसगढ़ की इस योजना की चर्चा हुई थी। छत्तीसगढ़ की इस योजना की तारीफ स्वयं प्रधानमंत्री भी मुख्यमंत्रियों की बैठक के दौरान कर चुके हैं। इसलिये माना जा रहा है कि आने वाले समय में इस प्रकार की योजना कुछ अन्यराज्यों में भी तथा राष्ट्रीयस्तर पर भी देखने को मिल सकती है।

नरवागरवाघरवाबाड़ी योजना के लांच होने के बाद से राज्य में रोजगार के मौके ग्रामीण स्तर पर ही मिलना शुरू हो गये हैं। यह योजना छत्तीसगढ़ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही है।

नरवागुरूवाघुरूवाबाड़ी योजना क्या है?
नरवागुरूवाघुरूवाबाड़ी योजना देश के छत्तीसगढ़राज्य में चलाई जा रही सबसे बड़ी योजनाओं में से एक है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 10, October 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नयी योजना के तहत राज्य में इन चारों चीजों के सरंक्षण पर बल दिया जा रहा है। राज्य में नरवागुरूवाघुरूवाबाड़ी योजना लागू होने के बाद भूजल के रिचार्जमेबढ़ोत्तरी, सिंचाई के लिये जल की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता, आर्गेनिक खेती के लिये पर्याप्त मात्रा में खाद तथा पशुओं की देखभाल व उनके लिये पर्याप्त चारे की व्यवस्था हो सकेगी।

नरवागुरूवाघुरूवाबाड़ी का अर्थ क्या है?

जिन 4शब्दों को मिला कर इस योजना का नामकरण हुआ उनके बारे में विस्तार से जानना हम सबके लिये बहुत जरूरी है।

नरवा-: छत्तीसगढ़ में नालों को नरवा कहा जाता है। इस योजना के तहत राज्य के नालों पर चेकडेम बना कर पानी रोकना तथा उस पानी को खेतों की सिंचाई के लिये उपलब्ध कराना है। इसके अलावा नालों के जरिये बरसात का जो पानी बह जाता है, उसे रोक कर भूगर्भीय जल को रिचार्ज करना है।

गरवा:- किसी भी गांव में मौजूद पशु धन को गरवा कहा जाता है। नरवागरवाघरवा तथा बाड़ी योजना के तहत गांवों में पशुओं के लिये Day Care Center बनाये जा रहे हैं। जिनमें पशुओं की देखभाल की जाती है।

घुरवा:- छत्तीसगढ़ी भाषा में घुरवा का मतलब गडढा होता है। पशुओं के Day Care Center में पशुओं का जितना भी गोबर जमा होता है, वह घुरवा में डाला जाता है। जिसमें उच्च कोटि की खाद बनती है। जो खेतों में डालने के लिये किसानों को बेंच दी जाती है।

बाड़ी:- बाड़ी का मतलब बगीचा होता है। यह बगीचा योजना के लाभार्थी के घर से सटा हुआ होता है। जिसमें उच्चकोटि के पोषण के लिये फल तथा सब्जियां इत्यादि उगाई जाती हैं।

नरवा गुरूवा घुरूवा बाड़ी योजनाकी जरूरी नियम:

- इस योजना का संचालन पूरे छत्तीसगढ़ के सभी जिलों की ग्राम पंचायतों में चरणबद्ध तरीके से होगा।
- प्रत्येक गांव में पशु धन का बेसलाइनसर्वे किया जाएगा।
- सर्वे के बाद प्रति 100 गौधन अथवा पशु धन के लिये 1 एकड़ जमीन चिन्हित करके उस पर गौठान का निर्माण कराया जाएगा।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 10, October 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- प्रति 100 गौधन के हिसाब से गौठान का आकार बढ़ाया जाएगा। मसलन यदि किसी गांव में 300 मवेशी हैं तो वहां गौठान का निर्माण3 एकड़ में होगा।
- जिस स्थान पर गौठान बनाया जाएगा, वहां पशुओं को पीने के लिये पानी के स्रोत मौजूद होने चाहिये। ताकि पशुओं को आते जाते समय पीने का पानी उपलब्ध हो सके।
- योजना के तहत बनने वाले गौठानों का निर्माण ऊंचाई वाले स्थानों पर ही किया जाएगा। ताकि जलभराव न हो और पशुओं के चलने फिरने से कच्ची भूमि में कीचड़ न हो सके।
- गौठान के अंदर ही घरवाबनया जाएगा ताकि वहां उच्चकोटि की खाद का निर्माण होता रहे।
- राज्य के सभी गौठानों की देखरेख का जिम्मा ग्राम गौठान समिति करेगी।
- योजना के तहत बनने वाले गौठानों के चारों और बांस बल्लियों की सहायता से बाड़ बनाई जाएगी।
- गौठान के अंदर फलदार, छाया दार तथा ऐसे पत्तीदार पेड़ भी लगाये जाएंगें, जिन्हें पशु चाव से खाते हों।
- नरवा गुरूवा घुरूवा बाड़ी योजना के तहत गौठानों में गोबर गैस प्लांट भी लगाये जाएंगें ताकि इन प्लांटों में बनने वाली गैस को सामुदायिक गैस इकाई से जोड़ा जा सके।
- गौठानों के नजदीक चारागाह विकसित कियेजाएंगें, ताकि पशुओं को हरा चारा पर्याप्त मात्रा में मिलता रहे।
- गौठानों में ग्रामीणों के लिये चौपाल भी बनाई जाएगी।
- प्रत्येकगौठान में कृत्रिम गर्भाधान, बधिया करण तथा टीका करण आदि की सुविधायें भी पशुओं के लिये उपलब्ध होंगी।
- इस योजना के तहत बनने वाली कम्पोस्ट तथा वर्मीकम्पोस्ट खाद को गांव के ही किसानों को कुछ मूल्य अदा करने के बाद उपलब्ध कराया जाएगा।

नरवागरवाघरवाबाड़ीयोजनाकेतहतबननेवालेगौठानकालाभ

- प्रत्येक गांव में बनने वाले गौठान में ग्रमीणों के पालतू पशुओं के साथ साथ आवारा पशुओं को गौठानों में लाया जाएगा। दिन के समय अधिकांश पशु गौठानों में ही रहेंगें, जिससे पशुओं के द्धारा खेतों में फसल चरने की समस्या से किसानों को छुटकारा मिल जाएगा।
- गौठानों में कृत्रिम गर्भाधान के जरिये अच्छीनस्ल के सांढ़ों का सीमेनउपलब्ध कराया जाएगा। जिससे पशुओं की नस्ल में सुधार होगा तथा दुधारू पशुओं की संख्या बढ़ेगी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 10, October 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- गौठानों में अधिक मात्रा में कम्पोस्ट खाद का निर्माण होगा। जिससे प्राकृतिक खाद की उपलब्धता बढ़ेगी तथा भूमि की उर्वरक क्षमता में भी बढ़ोत्तरी दर्ज की जा सकेगी।
- गौठानों में फल दार वृक्ष लगाये जाने से ग्रामीण बाजार मे फलों की उपलब्धतापर्याप्त मात्रा में रहेगी।

नरवागुरूवाघुरूवाबाड़ी योजना के तहत वर्मीकम्पोस्ट खाद :

प्रत्येक ग्राम में नरवा गुरूवा घुरूवा बाड़ी योजना के तहत 10-20 लोगों को रोजगार दिया जाएगा। गौठानों में वर्मीकम्पोस्ट खाद के उत्पादन के लिये वर्मीकिट प्रदान की जाएगी। जिसके जरिये वहां वर्मीकम्पोस्ट खाद बनाई जा सकेगी।

नरवागरवाघरवाबाड़ीके तहत पेड़ लगाने तथा उनके संरक्षण पर मिलेगा पैसा

जो लोग इस योजना के तहत रोजगार पायेंगें, उन्हें पेड़ लगाने तथा उनकोंसरंक्षित रखने के एवज में कुछ पैसा सरकार की ओर से दिया जाएगा। जिससे ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार देखने को मिलेगा।

नरवागरवाघरवाबाड़ीयोजनाकी विशेषताएं

- जिन गांवों में इस योजना का संचालन होगा, उन गांवों में दूध का उत्पादन बढ़ जाएगा। जिससे गांव में समृद्धि आएगी।
- गौठान के अतिरिक्तचारागाहों के लिये गौठान के नजदीक ही 5 से 10 एकड़ भूमि आरक्षित कर ली जाएगी। जिससे पशुओं को सरकारी सहायता से बनने वाले विशाल चारागाह चरने के लिये मिल सकेंगें।
- आवारा पशुओं को शरणस्थली मिल सकेगी। अभी पशु विशेष कर गायें तथा सांढ़ एक गंभीर समस्या बन चुके हैं। यह खेतों में लगी फसल को चरने के साथ साथ रौंद डालते हैं तथा ग्रामीणों पर हमला कर गंभीर रूप से घायल भी कर देते हैं। लेकिन गौठानों में रखे जाने से पशुओं को आश्रय मिलेगा तथा भोजन पानी भी पर्याप्त मात्रा में मिलता रहेगा।